[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3662

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

राजास्थानी चित्रकला में रंग संयोजन

Dr. Vasundhara Pawar
Prof. & Head- History M. L. B. Gov. Collage, Kila Bhavan, Indore

''पर्वतों में सुमेरु, पक्षियों में गरुण, व्यक्तियों में राजा श्रेष्ठ है, वैसे ही कलाओं में ''चित्रकला'' श्रेष्ठ मानी गई है।'' मानव की अनुभूतियों की अभिभक्ति का नाम कला है। **कुमार स्वामी** ने काहा है कि कला केवल भावों का प्रदर्शन ही नही करती अपितु अध्यात्मिक सन्देश की वाहक भी है। **कला'** शब्द का उल्लेख **ऋग्वेद** के **आठवें मण्डल** मे मिलता है। महाजनपद काल तक 64 कलाओं की गणना प्रारम्भ हो चुकी थी। भारतीय चित्रकला का स्वरूप जितना प्रशस्त है, उतना ही इसका इतिहास पुरातन है। भारत मे चित्रकला के प्राचिन्तम नमूने प्रागैतिहासिक शैल चित्रो मे मिलते है। जिनमें मिर्जापुर, भीमवेटिका तथा बाघ की गुफायें प्रमुख है।विकास के साथ ऐतिहासिक युग मे शुन्ग काल से गुप्त काल तक अजन्ता की गुफाओं मे सुन्दर चित्रकारी की गयी। कागज पर चित्रों का निर्मण 11 वीं 12 वीं शती मे शुरू हुआ, और जैन धर्म से सम्बन्धित अधिकॉश चित्र गुजरात और उसके आसपास के क्षेत्र मे बनाये गये।

राजस्थान की चित्रकला का अपना स्वतन्त्र असत्वित रहा है तथा भारतीय चित्रकला के इतिहास मे भी इसका अपना विशिष्ठ स्थान है। राजस्थान की चित्रकला अनेक राजपूत शैलिओं का सम्मलित रूप है। इन शैलिओं मेवाड, मारवाड, ज्यपुर, अलवर, बीकानेर, कोटा, बून्दी, नाथद्वार आदि शैलिया प्रमुख है। राजस्थान मे जितने प्रमुख नगर है उतनी ही चित्र शैलिया प्रचलित रही है परन्तु इन सब शैलियों के विकास में यंहा के राजपूत नरेशो की प्रमुख भूमिका रही है।

विभिन्न विद्वानो ने भौगोलिक वा सास्कृतिक अधार पर राजस्थानी चित्रकला को विभिन्न शैलिओं में विभाजित किया है।**मेवाड शैली:–** राजस्थानी चित्रकला का मौलिक स्वरूप जैन, मालवा, अपभ्रंश आदि कलाओं के सामन्जस से स्थापित हुआ है। उस स्वरूप का चित्रण मेवाड शैली के रूप मे माना जाता है। राणाकुम्भा, राणसांगा, प्रताप आदि राजपूत शासको ने चित्रकला के विकास मे पूर्ण योग दिया।1260 का '' **श्रावक प्रतीकमर्ण सूत्रचुर्णी**'' और 1423 का '' **सपासनाचार्यम** '' ग्रन्थों के चित्र तत्कालीन चित्रशैली पर पर्याप्त प्रकाश डालते है। इस शैली के अन्तरर्गत बने चित्रो में, चटकदार सीमित ' लाला, पीला, काला ' रंग का प्रयोग किया गया है। 16 वीं सदी के अन्त मे इस शैली मे परिवर्तन आता गया। रंगों मे विभिता आ गयी, आकृतिओ का भावात्मक आधार पर रूपान्तार किया जाने लगा। 17 सदी के आते आते मेवाड की अपनी एक शैली विकसित हो चली थी। माहाराणा अमर सिंह द्वारा 1605 में '' **रागमाला** '' के चित्र इसका प्रमाण है। इन चित्रो में अत्यन्त चटक दार रंगो का प्रयोग हुआ है। माहाराणा जगत सिंह के काल में बने चित्रों कि विशेषताए है, पीला, नीला, सफेद, लाला, हारे, गुलाबी, काले, लाजवर्द ' एक प्रकार का नीला रंग जो फारस से आया था ' का प्रयोग किया गया है। मेवाड शैलिओं के विषयों में भागवत पुराण, रामायण, दरबारी जीवन, राग रागिनिओं के चित्रण, नायिका भेद एवं सुरसागर प्रमुख है।रागमाला चित्रावली की शैली विशिष्ठ है। इस शैली के अर्न्तगत चटक रंगो का प्रयोग तथा रासायनिक एवं खनिज रंगो का प्रयोग अधिक किया गया है। मेवाड शैली का समृद्व रूप हमे चित्तौड के प्राचीन महलो के रंगो तथा फूल की पंखुडियों की रेखाओं में दिखायी देता है। जो सदिया बीत जाने पर भी आज नवीन सजीव दिखायी देती है।

मारवाड शैली:– डॉ. जय सिंह के शब्दो मे '' जोधपुर शैली से ही मारवाड शैली का प्रारम्भ माना जा सकता है। चौखेला महल के भित्ती चित्र तत्कालीन चित्रण के प्रतीक है।''

इसका विकास काल 18 वीं सदी माना जाता है। मारवाड चित्र शैली को भी कई शाखाओं में विभक्त किया गया है। जोधपुर के अतिरिक्त नागौर, जालौर, मेडता आदि भी इस चित्र शैली के केन्द्र थे। इस चित्र शैली के प्रारम्भिक उदाहरण मे **भागवत पुराण** का चित्रण तथा **ढोलामारू** के चित्र मुख्य है। इस सदी में चित्रों को अधिक सजीव व प्रभावोत्पादक बनाने हेतु विभिन्न रंगो का प्रयोग किया जाने लगा। इस शैली मे अधिकतर लाला, पीले रंगो का प्रयोग किया गया है, जो स्थानीय विशेषता के कारण है। 18 वी शताब्दी के चित्रो मे सुनहरी रंगो का प्रयोग मुगल ढंग से हुआ है।

बून्दी शैली:– प्रारम्भ मे राजनीतिक अधीनता के कारण बून्दी कला में मेवाड शैली का बहुत प्रभाव रहा। इस स्थिति को व्यक्त करने वाले 1625 ई. के लगभग के दो चित्र जिनमे **रागमाला** और दुसरा **भैरवी रागनी** बडे उपादेय है। इन चित्रों में नुकाली नाक, मोटे गाल, लाला, पीले, व गुलाबी रंगो की प्रचुरता स्थानीय विशेषताओं का द्योतक है। सन् 1665 के बाद बून्दी चित्रकला शैली अपने समृद्वि के शिखर पर पहुंच गई। इस काल मे बने चित्रों मे नारंगी एवं हरे रंग का तथा लाल रगों की अधिकता थी।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

सन् 1750 के बाद बून्दी शैली अवनति की ओर अगृसित होती है।सम्भवतः राजाओ की उपेक्षा के कारण ऐसा हुआ। कला पर भी इसका प्रभाव पडा। चमकदार नारगी एवं हरापन बाद में हल्का पीलापन व हरेपन मे बदल जाता है।

बीकानेर शैली:– बीकानेर शैली मारवाड शैली से काफी साम्य रखती है। राजा राय सिंह के समय से इस शैली पर मुगल शैली का प्रभाव बढने लगा। यहा भी भागवत पुराण केशव की रसिक प्रिया और रागरागणी पर बहुत से चित्र बनायें गये। 1600 के आसपास चित्रित रासिक प्रिया बीकानेर शैली और मुगल शैली के समन्जस्य का सुन्दर नमुना है। इ समे मकान का अंकन, अर्द्वचन्द्र और तारो का चित्रण मुगल शैली के अनुरूप है। जबकी गहरे लाल, नीले और हरे रंगो का प्रयोग मेवाड शैली के अनुरूप है।

जयपुर शैली:– प्राचीन समय मे जयपुर और उसका निकटवर्ती क्षेत्र ढुंढाड कहलाता था। चित्रकला के विकाश की दृष्टि से इस क्षेत्र मे आमेर, जयपुर, अलवर, शेखावटी, करौली आदि शैली को भी सम्मलित किया जाता है।आमेर शैली के प्राचीन उदाहरण सन् 1600 से 1614 के आसपास आमेर की छत्रियों के भित्ती चित्र इस शैली का प्रारूप दर्शातें है। आमेर शैली का दूसरा चरण मिर्जाराजा जयसिंह के समय रीति कालीन परम्परा से अधिक प्रभावित थे। जयपुर शैली में व्यक्ति चित्रों को विशेष स्थान प्राप्त है। राजाओं के चित्र अधिकांश विशाल अकृति के मिलते है। यहा के **रास** के चित्र विशेष रूप से प्रसिद्व है।इस शैली में लाल, पीले, नीले, सफेद तथा काले रंगो का चित्रो मे अधिक प्रयोग हुआ है।

किशनगढ शैली :– किशनगढ नामक छोटे से राज्य मे सब शैलियो से हटकर कलात्मक दृष्टि से एक अत्यन्त रोचक तथा लावणपूर्ण शैली का प्रारम्भ हुआ, जिसे कलाविद भारतीय कला के इतिहास में ' **लघु आश्चर्य** की संज्ञा देते है 'इस राज्य की स्थापना 1611 मे उदय सिंह के पुत्र किशन सिंह ने की थी। किशनगढ शैली के चित्रो को प्रकाश मे लाने का श्रेय डा. एरिक डिकिन्सन को है इस शैली का विकास विशेष रूप से राजदरबार मे हुआ तथापि इस शैली के चित्रो मे विषयो की विविधता मिलती है। नागरी दास के सयम से राध और कृष्ण तथा कृष्ण लीला यहा के लोक प्रिय विषय बन गये। इस शैली के चित्रो मे अधिकांशतः अमिश्रित रंगो का प्रयोग किया गया है। पृष्ठभूमि में हरे रंगो की अधिकता है। रगों की दृष्टि से पीला, लाल, सफेद, नीला, गुलाबी, सुनहरा तथा नारंगी रंग अधिक काम मे लिये गये है। किशनगढ शैली के चित्रो मे रंग संयोजन, वस्त्रो की सज्जा मोती हीरो का चित्रण इसकी निजी विशेषता है। श्वेत एवं गुलाबी रंगो का मिश्रण किशनगढ चित्रों मे एक अद्भुत एवं आकर्षक प्रभाव पैदा करने मे समर्थ हुआ है। राजस्थान की इन समस्त शैलिओ के अध्ययन से एक बात निर्विवाद रूप से स्पष्ट हो जाती है, कि शैलिओ के विभिन्नता होते हुये भी सभी मे मौलिक एकता है। राजस्थान की चित्रकला में रंगो का चुनाव विशेष महत्व रखता है। पीला, लाल, सफेद, हरा, सुनहरी, गहरा पीला आदि रंगों का सुन्दर संयोजन किया गया है। इस कला की सबसे बडी विशेषता गहरे व चटक रंगो का प्रयोग होना है। राजपूत सभ्भता और संस्कृति के अनुरूप कलाकारो ने रंगो से चित्रो का सजीव बना दिया है। अजन्ता शैली से प्रारम्भ होकर राजस्थानी चित्रकला भारतीय चित्रकला के इतिहास मे विशेष स्थान रखती है।मेवाड, मारवाड और आमेर मे पनपी विभिन्न शैलिया समय के साथ–साथ विकसित होती गयी। और कला जगत को समृद्व करने मे अत्यन्त सहायक सिद्व हुई।

सन्दर्भ ग्रन्थ:–

1 *कुमार स्वामी............ राजपूत पेंटिंग*
2 *कालूराम शर्मा................मध्यकालीन राजस्थान का इतिहास*
3 *सुरेन्द्र सिंह चौहान..............राजस्थानी चित्रकला*
4 *शर्मा, पावा.......................... राजस्थान का इतिहास*
5 *खुराना एवं गुप्ता................. राजस्थान का इतिहास*
6 *च्मन किरण...........................भारतीय चित्रकला*
7 *ळेतसिंह बाघेल...................... राजस्थान का इतिहास*
8 *गोपीनाथ शर्मा.................. राजस्थान का संस्कृतिक इतिहास*